सृष्टि में नवीनता, सृजन, विकास, प्रेम, आनन्द इत्यादि का शुद्धतम स्वरूप 'काम-शक्ति' है। जीवन में चाहे आध्यात्मिकता अथवा भौतिकता की उच्चता को प्राप्त करना चाहते है तो सर्वप्रथम 'काम-शक्ति' अर्थात् आकर्षण, सम्मोहन, प्रेम, यौवन,रस इत्यादि तत्वों से स्वयं को सरोबार करना होगा।

चाहे स्त्री हो या पुरुष जीवन के किसी भी क्षेत्र में उच्चता प्राप्त करने के लिये काम तत्व से परिपूर्ण होना आवश्यक है।

मदनाक्षी काम स्वरूपा अप्सरा हैं, और इसकी सिद्धि साधक के व्यक्तित्व में काम भाव पूर्ण रूप से भर देती है, जिससे उसका अनंग काम तत्व सहस्र गुना हो जाता है।

प्रत्येक साधना को साधक अपनी सुविधा अथवा अपनी आवश्यकता के अनुसार वर्ष पर्यन्त विभिन्न मुहूर्तों पर सम्पन्न कर सकता है, फिर भी हमारे ऋषि-मुनियों ने साधनाओं को अल्प प्रयास में सिद्ध करने हेतु कुछ विशिष्ट मुहूर्तों के बारे में ग्रंथों में उल्लेख किया है। ऋषियों को इस बात की जानकारी थी कि मानव जाति अपने विकास क्रम में इतनी अधिक व्यस्त हो जाएगी की निरन्तर पूजा-साधना उनके लिये संभव नहीं होगा।

मानव जाति के इस विकास क्रम को जानकर ही हमारे ऋषियों ने पर्वों, तिथियों और कुछ ब्रह्माण्डीय घटनाओं पर विशेष साधना का उल्लेख किया। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि कालचक्र के खण्डों में कुछ क्षण इतने विशेष होते है कि उस समय किसी शक्ति के लिए किया गया आह्वान अन्य काल में किये गये आह्वान से कई गुना अधिक तेजस्वी, शक्तिशाली होता है। साधक के इस आह्वान को दैवीय शक्तियां स्वीकार कर उसके साथ सांमजस्य स्थापित करती है और उसे जीवन में वो सब कुछ प्रदान करती है, जिसका साधक हकदार होता है, जिसके लिये साधक निरन्तर प्रयत्नशील होता है।

प्रत्येक वर्ष हमें कई सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण दिखाई देते हैं जो पूर्ण (खग्रास) अथवा आंशिक (खंडग्रास) होते हैं । प्रत्येक ग्रहण पृथ्वी पर किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में ही दिखाई देता है परन्तु इसका प्रभाव समूची सृष्टि पर होता है।

आने वाले दिनों में दो महत्वपूर्ण ग्रहण घटित होने वाले हैं। दिनांक 12 अगस्त 2026 श्रावण मास अमावस्या को सूर्य ग्रहण और इसी क्रम में **28 अगस्त 2026** श्रावण पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण होगा।

ग्रहण का शाब्दिक अर्थ ही स्वीकार करना, आत्मसात करना या लेना है स्वयं में ज्ञान के प्रकाश को प्रज्वलित करने में ग्रहण काल विशेष रूप से प्रभावी सिद्ध होता है।

निखिल मंत्र विज्ञान पत्रिका का सदैव यही प्रयास रहा है कि निखिल साधक-शिष्य श्रेष्ठ और अद्भुत ही ग्रहण करें। पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में लगातार प्रयास करता

रहता है कि साधकों को विशिष्ट पर्वों, उत्सवों, त्यौहारों और श्रेष्ठ मुहूर्तों में विशिष्ट साधनाएं उपलब्ध कराई जाए, जिससे उनके जीवन स्तर में, आध्यात्मिक स्तर में, भौतिक स्तर में उन्नति हो।

अपने प्रयासों के इसी क्रम में गुरुदेव के आदेशानुसार सूर्यग्रहण के विशेष साधनात्मक काल हेतु **'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना (जुलाई 2026)'** की साधना सामग्री प्राण प्रतिष्ठित किया गया है तथा चन्द्र ग्रहण हेतु **'मदनाक्षी अप्सरा साधना सामग्री'** को प्राण प्रतिष्ठा युक्त किया गया है।

मदनाक्षी अप्सरा

रम्भा, ऊर्वशी, मेनका, तिलोत्तमा, सुकेशी, इत्यादि अप्सराओं के सम्बन्ध में उल्लेख बहुत सारे ग्रंथों में तोड़-मरोड़ कर आया हुआ है, लेकिन **'मदनाक्षी'** के सम्बन्ध में बहुत कम वर्णन है, क्योंकि इस साधना की विशेष प्रक्रिया है, इसके कुछ विशेष गुण हैं, और इसकी साधना पूरे वर्ष नहीं की जा सकती।

यह साधना साधक अकेले बैठ कर ही सम्पन्न करें, और जहां तक संभव हो, एकान्त स्थान में सम्पन्न करनी चाहिए, और साधना के सम्बन्ध में किसी से चर्चा नहीं करनी चाहिए। सिद्धि प्राप्त होने से पूर्व ही साधना के सम्बन्ध में रहस्य प्रकट करने से फल प्राप्ति नहीं होती है।

मदनाक्षी अप्सरा 5 दिवसीय सायंकालीन साधना है जिसे सूर्यास्त के पश्चात् सम्पन्न किया जाता है। **श्रावण पूर्णिमा 28 अगस्त 2026 को चन्द्र ग्रहण के साधनात्मक मुहूर्त (प्रातः 6:53 से 12:31 तक) के मध्य प्रारम्भ कर शेष 4 दिवस सांयकालीन ही सम्पन्न करें।** विशेष साधनात्मक मुहूर्तों के अतिरिक्त मदनाक्षी अप्सरा साधना को **किसी भी पूर्णिमा** से प्रारम्भ किया जा सकता है।

इस साधना हेतु कुल चार सामग्री आवश्यक है -

1. मदनाक्षी चैतन्य गुटिका, 2. 21 वाग्भव बीज, 3. आठ अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न, 4. नव चेतना प्राकाम्य। इसके अतिरिक्त साधना में प्रतिदिन पुष्प, चावल (अक्षत), सुपारी, सिन्दूर, काजल, इत्र, लाल वस्त्र, पुष्प माला आवश्यक है।

इसी साधना सामग्री से 5 दिन नित्य पूर्ण विधि-विधान से साधना सम्पन्न करनी है।

साधना विधान

साधक स्नान कर, सुन्दर वस्त्र पहनें, अपने कपड़ों पर इत्र इत्यादि सुगन्धित द्रव्य अवश्य लगाएं, अपने सामने एक पात्र में लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य में **'मदनाक्षी चैतन्य गुटिका'** स्थापित करें, सुगन्धित धूप, दीप जलायें और पूजा स्थान का द्वार बन्द कर साधना प्रारम्भ करें, स्वयं के सिन्दूर का तिलक लगायें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि, **'मैं (अपना नाम) अपनी समस्त मनोकामनाओं की सिद्धि हेतु, लाल वस्त्र धारण किये हुए, रत्न आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्न वदना, अरुण आभा-युक्त, सुन्दरतम त्रिपुर मदनाक्षी का ध्यान करते हुए, साधना सम्पन्न करता हूं।'**

अब साधक इत्र से मदनाक्षी गुटिका को स्नान कराएं, फिर उसे पुनः स्थापित करते हुए, उस पर सिन्दूर का लेपन करें, तत्पश्चात् सुगन्धित पुष्प चढ़ायें, स्वयं सुगन्धित पुष्पों की माला पहनें।

अब **नव चेतना प्राकाम्य** स्थापित करें और उसके चारों ओर **अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न** रखें, ये रत्न त्रिपुर मदनाक्षी की आठ सहयोगी अप्सराओं के प्रतीक हैं, ये आठ सहयोगी अप्सराएं हैं -

1. उर्वशी, 2. मेनका, 3. रम्भा, 4. धृताची, 5. पुंजकस्थला, 6. सुकेशी, 7. मंजुघोषा, 8. महारंगवती। प्रत्येक के आगे एक-एक पुष्प रखते हुए आह्वान करें -

क्लीं उर्वशी आवाह्यामि
क्लीं मेनका आवाह्यामि
क्लीं रम्भा आवाह्यामि
क्लीं धृताची आवाह्यामि
क्लीं पुंजकस्थला आवाह्यामि
क्लीं सुकेशी आवाह्यामि
क्लीं मंजुघोषा आवाह्यामि
क्लीं महारंगवती आवाह्यामि

अब साधक वीर मुद्रा में बैठकर 21 वाम्भव बीजों से त्रिपुर मदनाक्षी की शक्ति सोलह योगिनियों और पांच बाणों का आह्वान करें, यह आह्वान साधना में प्रमुख है, इन शक्तियों की स्थापना होने पर जरा, पीड़ा, अपमृत्यु, भय, भूत-प्रेत की बाधा का पूर्ण नाश हो जाता है, और साधना में किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता है, तत्पश्चात् पांच बाणों का आह्वान

करना चाहिए, जिससे साधक शक्ति सम्पन्न होने की क्रिया प्रारम्भ कर देता है, इन सोलह योगिनियों का पूजन निम्न प्रकार से करते हुए, अपने सामने एक-एक वाग्भव बीज स्थापित करना है -

ऐं गजानना नमः	*ऐं सिंहमुखी नमः*
ऐं वाराही नमः	*ऐं मयूरी नमः*
ऐं विकटानना नमः	*ऐं विकटलोचना नमः*
ऐं शुष्कोदरी नमः	*ऐं सुराप्रिया नमः*
ऐं रक्ताक्षी नमः	*ऐं पाशहस्ता नमः*
ऐं प्रचण्डा नमः	*ऐं चण्डविक्रमा नमः*
ऐं पापहन्त्री नमः	*ऐं तापनी नमः*
ऐं विद्युत्प्रभा नमः	*ऐं कामाक्षी नमः*

अब मदनाक्षी के पांच बाणों का आह्वान किया जाता है, इन बाणों की शक्ति ही मदनाक्षी की शक्ति है -

द्रां द्रावण बाणाय नमः
ब्लूं मोहन बाणाय नमः
द्रीं शोषण बाणाय नमः
सः उन्मादन बाणाय नमः
क्लीं तापन बाणाय नमः

इन बाणों का मंत्र जप होने से साधक में द्रावण, शोषण, तापन, मोहन तथा उन्मादन तत्व आ जाता है, एक सुगन्ध वातावरण में छा सी जाती है, अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए प्रत्येक बाण मंत्र का 11-11 बार जप करना चाहिए।

यह पूजन क्रम पूरा हो जाने के पश्चात् मदनाक्षी का मन्त्रानुष्ठान सम्पन्न किया जाना चाहिए, शास्त्रों के अनुसार किसी विशेष इच्छा पूर्ति हेतु भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है और जीवन में पूर्ण रूप से मदन मुख, माया सुख, ऐश्वर्य सुख, सहयोग हेतु भी मदनाक्षी अप्सरा साधना सम्पन्न की जाती है।

मदनाक्षी अप्सरा मंत्र

॥क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर मदनाक्षी म दीप्सितां योषितं देहि वांछित कुरु स्वाहा॥

इस मंत्र का 108 बार जप वीर मुद्रा में ही करना है, और फिर जब मंत्र जप अनुष्ठान पूरा हो जाय तो नेत्र बन्द कर अपने हाथ ऊंचे कर चुपचाप ध्यान मुद्रा में बैठे रहें, कुछ विशेष चेतनी क्रियाओं का अनुभव होता है, और ये सब साधना में सफलता की प्रतीक हैं।

यह पूजा विधान पांच दिन इसी रूप में करना है, पुष्प प्रतिदिन नये लायें, जब पांच दिन पूर्ण हो जायें तो मदनाक्षी अप्सरा के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व में सम्मोहकता और आकर्षण का विकास होता है। आपके जीवन में रस का प्रवाह बढ़ने लगता है, आपकी वाणी रसयुक्त होने से भावनात्मक एवं व्यवसायी दोनों ही क्षेत्रों में आप सफलता प्राप्त करते है। मदनाक्षी अप्सरा साधना में सफलता प्राप्त करने हेतु इस साधना को गुप्त रूप से सम्पन्न करें तथा साधनात्मक अनुभव गुरुदेव के अतिरिक्त किसी से व्यक्त नहीं करें।

जीवन में भौतिक सुखों की इच्छा रखने वाले, पूर्ण आनन्द से जीवन जीने की इच्छा रखने वाले साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. 750/-

मदनाक्षी अप्सरा दीक्षा

मदनाक्षी अप्सरा अतिविशिष्ट अप्सरा है। मदनाक्षी अप्सरा में लक्ष्मी तत्त्व, आकर्षण शक्ति तथा ज्ञान का अद्भुत समन्वय है। सद्गुरुदेव से मदनाक्षी अप्सरा दीक्षा ग्रहण कर साधना सम्पन्न करने से -

* **मदनाक्षी अप्सरा साधना एवं दीक्षा से साधक हर समय अपने आपको यौवनमय, रसयुक्त और सौन्दर्यप्रिय रहता है।**
* **भौतिक समृद्धि के साथ ही व्यक्तित्व में आकर्षण और आत्मविश्वास का भी विकास होता है।**
* **मदनाक्षी अप्सरा धन प्राप्ति के नवीन अवसर के साथ ही साथ आकस्मिक लाभ तथा गुप्त संसाधनों को प्रदान करती है।**
* **मदनाक्षी अप्सरा साधक की वाणी में प्रभावशीलता तथा सम्मोहनात्मक का विकास करती है।**
* **साधक की तार्किक शक्ति प्रबल होती है। जिससे निर्णय क्षमता का विकास होता है।**

- मदनाक्षी अप्सरा दीक्षा
(प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-